No. of Printed Pages : 5

पी.जी.डी.टी.-01

अनुवाद में स्नातकोत्तर डिप्लोमा कार्यक्रम

सत्रांत परीक्षा

01802 **दिसम्बर, 2014**

पी.जी.डी.टी.-01 : अनुवाद : सिद्धांत और प्रविधि

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : ***सभी*** *प्रश्नों के उत्तर देने हैं ।*

---

1. अननुवाद्यता के विविध आयामों को स्पष्ट करते हुए अनुवाद की सीमाओं पर प्रकाश डालिए । *20*

अथवा

अनुवाद प्रक्रिया के विभिन्न चरणों का विश्लेषण कीजिए ।

2. शब्दकोश-निर्माण की प्रक्रिया को स्पष्ट कीजिए । *20*

अथवा

संस्कृति के विकास में अनुवाद की भूमिका पर प्रकाश डालिए ।

3. निम्नलिखित में से किन्हीं ***दो*** पर टिप्पणी लिखिए : *2×10=20*

(क) पुनरीक्षण का महत्त्व

(ख) अनुवाद के विविध प्रकार

(ग) अनुवाद समीक्षा

(घ) कोशों की संकेत प्रणाली

4. निम्नलिखित का हिन्दी/अंग्रेज़ी में अनुवाद कीजिए : *5×2=10*

To turn a deaf ear

Once in a blue moon

To kill two birds with one stone

To stand amazed

To dig one's own grave

अथवा

दाँतों तले उँगली दबाना

कमर कसना

दाल न गलना

का बरषा जब कृषी सुखाने

मुँह में राम बगल में छुरी

5. नीचे दिए गए शब्दों को कोश के क्रम में लिखिए : *5+5=10*

(क) समय, सवेरा, स्वप्न, संगति, सुयश, सृष्टि, सूखा, सोपान, सौभाग्य, सात ।

(ख) rat, right, rose, red, rule, rigid, roam, roaster, routine, rubber.

6. निम्नलिखित का हिन्दी में अनुवाद कीजिए : *10*

Man is a social animal. Once his primary needs, such as food, shelter and clothing are met, it becomes necessary for him to fulfil the social needs of communication. He must

communicate with other human beings not only to seek information, but also to share with them his experiences, his joys and sorrows. The signals man makes through speech, action or artistic creation, have all this common-purpose – to be understood by others. Early man expressed himself through gestures with his hands and face. This was the first mode of communication available to him. Man could also produce mutually unconnected grunts and groans to express his basic emotions like anger and satisfaction. This was another mode of communication for him. With the passage of time, he began to connect one sound with another and turn his grunts and groans into sound patterns.

अथवा

All writing can be broadly classified into two categories, creative and non-creative. Creative writing is almost a spiritual activity. Its purpose is not to inform but to reveal. A highly creative writer meditates on either concrete things of the world, or on abstract thoughts like love or divinity, and pours out his feelings in his writing. On the other hand non-creative writing deals with ideas. Its purpose is to inform, it adds to your information

and widens your knowledge. Books on history, religion and science, etc. belong to this category. In order to achieve best this purpose of informing, the writer will have to be analytical (विश्लेषणात्मक) in his approach. Although, on the basis of the subject-matter, all writings can be divided into creative and non-creative, it is not unusual that a highly imaginative writer can produce a non-creative work in a creative manner.

7. निम्नलिखित का अंग्रेज़ी में अनुवाद कीजिए : *10*

भाषा के संदर्भ में संपर्क भाषा का अर्थ होता है – जोड़ने वाली भाषा । वह ऐसी भाषा है जो अलग-अलग भाषाओं के बोलने वालों को जोड़ती है । उनके बीच परस्पर संपर्क स्थापित करने का माध्यम बनती है । जब दो अलग-अलग भाषाएँ बोलने वाले व्यक्ति आपस में बातचीत करना चाहते हैं, तो उन्हें किसी ऐसी भाषा की ज़रूरत होती है, जिसे वे दोनों समझ सकें । ऐसी भाषा उन दोनों में से किसी एक की भाषा हो सकती है अथवा कोई तीसरी भाषा हो सकती है । यह संपर्क केवल बातचीत के स्तर तक ही सीमित न होकर, व्यवहार के सभी क्षेत्रों तक फैला होता है । राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न भाषाएँ बोलने वालों के बीच संपर्क के लिए एक भाषा का होना आवश्यक है । भारत में प्राचीन युग में संस्कृत, संपर्क भाषा की भूमिका निभाती रही । धीरे-धीरे वह स्थान हिन्दी ने ले लिया ।

अथवा

रेडियो के आविष्कार ने आवाज़ को एक स्थान से दूसरे स्थान तक भेजना मुमकिन बनाया । रेडियो पर केवल समाचारों का प्रसारण नहीं होता । उस पर वार्ता, साक्षात्कार, गीत, संगीत, नाटक आदि कई विधाओं में सामग्री प्रसारित होती है । रेडियो को केवल शिक्षित और शहरी लोग ही नहीं सुनते अपितु उसे गाँव में रहने वाले और अशिक्षित लोग भी सुनते हैं और उसका आनंद लेते हैं । रेडियो के माध्यम की विशेषता यह है कि इसका आस्वादन सिर्फ़ सुनकर ही लिया जा सकता है । अतः उस पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों में यह विशेषता होनी चाहिए कि उसमें जो कुछ भी प्रसारित हो, उसका पूरा आनंद सुनकर लिया जा सके । मुद्रित माध्यमों को पढ़ते समय यह सुविधा होती है कि अगर बात समझने में कहीं कठिनाई आ रही है, तो हम दुबारा, तिबारा पढ़कर उसका आनंद ले सकते हैं । परन्तु रेडियो के साथ यह सुविधा नहीं होती । वहाँ कही गई बात को एक ही बार सुनकर समझना होता है ।